भूमिका

साहित्य और सिनेमा दो पृथक विधाएं हैं लेकिन दोनों विधाओं में बहुत गहरा संबंध है। साहित्य और सिनेमा दोनों ऐसी विधाएं हैं जो मनुष्य की जीवन-शैली से जुड़ी हुई हैं। जब कोई व्यक्ति सिनेमा देखता है तो वह अपने को उसका एक अंग महसूस करता है और वह सिनेमा की कथा के साथ रोता है तथा उसी के साथ हँसता भी है। तकनीकी रूप से बेशक दोनों विधाओं के रूप में अंतर हो परंतु समाज के प्रत्येक पक्ष को दर्शाने की कला दोनों ही विधाओं में है।

साहित्य और सिनेमा के इसी सह-संबंध को आधार बनाकर यह शोध कार्य किया गया है जिसमें "हरिशंकर परसाई की कहानियों का सिनेमाई रूपांतरण" विशेष संदर्भ में "परसाई कहते हैं" को विषय के रूप में लिया गया है 'परसाई कहते हैं' साप्ताहिक टेलीविजन कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम परसाई जी की 13 कहानियों का टेलीफिल्म के रुप में किया गया सिनेमाई रूपांतरण है। हरिशंकर परसाई जी का लेखन कार्य स्वतंत्र भारत के साथ शुरू हुआ परसाई जी ने अपने लेखन के माध्यम से समाज के प्रत्येक पक्ष को अपनी रचनाओं में शामिल किया है। जैसे प्रत्येक व्यक्ति अलग होता है वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति की लेखन शैली भी दूसरे व्यक्ति से अलग होती है परसाई जी ने अपनी लेखन शैली के रूप में व्यंग्य को चुना और साहित्य को विस्तार रूप प्रदान किया।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को मैंने चार अध्याय में विभाजित किया है। **प्रथम अध्याय** 'माध्यम रूपांतरण की प्रक्रिया और साहित्य सिनेमा का अंतर्संबंध' है। इस अध्याय को **चार उप-अध्यायों** 'रूपांतरण की प्रक्रिया', 'साहित्य और सिनेमा का अंतर्संबंध', 'साहित्य और फिल्म' तथा 'साहित्य और टेलीविजन' में विभाजित किया गया है। इस अध्याय में साहित्य और सिनेमा के संबंध के साथ-साथ रूपांतरण की प्रक्रिया को जानने का प्रयास किया गया है। साथ ही इस अध्याय में साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्मों, धारावाहिकों और टेलीफिल्मों आदि पर विचार किया गया है।

इस लघु शोध-प्रबंध का **दूसरा अध्याय** "माध्यम रूपांतरण के लिए चयनित हरिशंकर परसाई की कहानियों का विश्लेषण" है। इस अध्याय को **चार उप-अध्यायों** में विभाजित किया गया है जिसमें 'परसाई जी का व्यक्तित्व', 'परसाई जी का रचना-संसार', 'परसाई जी की कहानियों में समाज' तथा 'चयनित कहानियों का विश्लेषण' है। इन उप-अध्ययों के माध्यम से परसाई जी के व्यक्तित्व से लेकर उनकी रचनाओं पर विचार किया गया है, इस अध्याय में परसाई जी की कहानियों में व्यक्त समाज के प्रत्येक पक्ष को समझने और समझाने की कोशिश की गई है और साथ ही साथ इस अध्याय में परसाई जी की चयनित कहानियों का विश्लेषण भी किया गया है। इन कहानियों का चयन 'परसाई कहते हैं' कार्यक्रमों में दिखाई गई कहानियों से किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का **तीसरा अध्याय** "हरिशंकर परसाई की चयनित कहानियों के सिने- रूपांतरण की प्रक्रिया का अध्ययन" है। इस अध्याय को भी **चार उप-अध्यायों** 'कुंदन शाह और परसाई कहते हैं- परिचय',

'साहित्य और सिनेमा की रचना प्रक्रिया', 'रूपांतरण के कुछ मुख्य बिंदु' और 'कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन' में विभाजित किया गया है जिससे उपअध्याय विभाजन की क्रमबद्धता को बनाए रखने में सुविधा हो। *प्रथम उप-अध्याय* में निर्देशक कुंदन शाह का परिचय देते हुए कार्यक्रम 'परसाई कहते हैं' का परिचय भी दिया गया है। कुंदन शाह द्वारा ही हरिशंकर परसाई की कहानियों का सफल निर्देशन 'परसाई कहते हैं' कार्यक्रम के नाम से हुआ है, *दूसरे उप-अध्याय* में साहित्य और सिनेमा की रचना प्रक्रिया पर विचार किया गया है जिसमें दोनों विधाओं के स्वरूप और तत्वों को समझने का प्रयास किया गया है। *तीसरे उप-अध्याय* में रूपांतरण के मुख्य बिंदुओं पर विचार किया गया है और *चौथे उप-अध्याय* में चयनित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें परसाई की मूल कहानियों से सिने- रूपांतरित कहानियों को समझा गया है।

लघु शोध-प्रबंध का **चौथा अध्याय** 'चयनित कहानियों के सिने-रूपांतरण की समस्याएं एवं सीमाएं' है। इस अध्याय को **पांच उप-अध्यायों** में विभाजित किया गया है, जिसमें 'कथा से पटकथा- परिवर्तन की समस्या', 'लेखक बनाम निर्देशक', 'पाठक बनाम दर्शक', 'समय का अंतराल और निर्देशन' और 'बाजार का दबाव' उप-अध्याय हैं। इस अध्याय में साहित्यिक कृतियों पर आधारित सिनेमाई रूपांतरण में आने वाली समस्याओं और सीमाओं को समझा गया है। इन समस्याओं में कथा से पटकथा परिवर्तन की समस्या को देखा गया कि किस प्रकार एक लेखक जब निर्देशक के द्वारा दिखाया जाता है तो पुनःसृजन की किन समस्याओं से गुजरता है। इस पुनःसृजन को एक पाठक किस प्रकार दर्शक के रूप में देखता है और किसी भी कृति के इस पुनःसृजन को समय, देशकाल और वातावरण किस प्रकार प्रभावित करता है तथा आधुनिक बाजार उस कृति का कैसे स्वागत करता है। इन सभी विषयों को समझने का प्रयास किया गया है। अंत में उपसंहार में सभी अध्यायों का मूल्यांकन किया गया है तथा शोध कार्य में प्रयुक्त ग्रंथों की सूची के साथ ही परिशिष्ट में संकलित सूचनाओं को भी दिया गया है।

साधना